आजादी का अमृत महोत्सव (India@75) कार्यक्रम के दौरान केन्द्रीय मृदा एवं सामग्री अनुसंधानशाला में "पारंपरिक जल निकायों के पुनरुद्धार से संबंधित जागरूकता" के विषय पर श्री राजेंद्र सिंह सेहरा, वैज्ञानिक 'डी' द्वारा ऑनलाइन भाषण दिया गया । #आजादीकाअमृतमहोत्सव

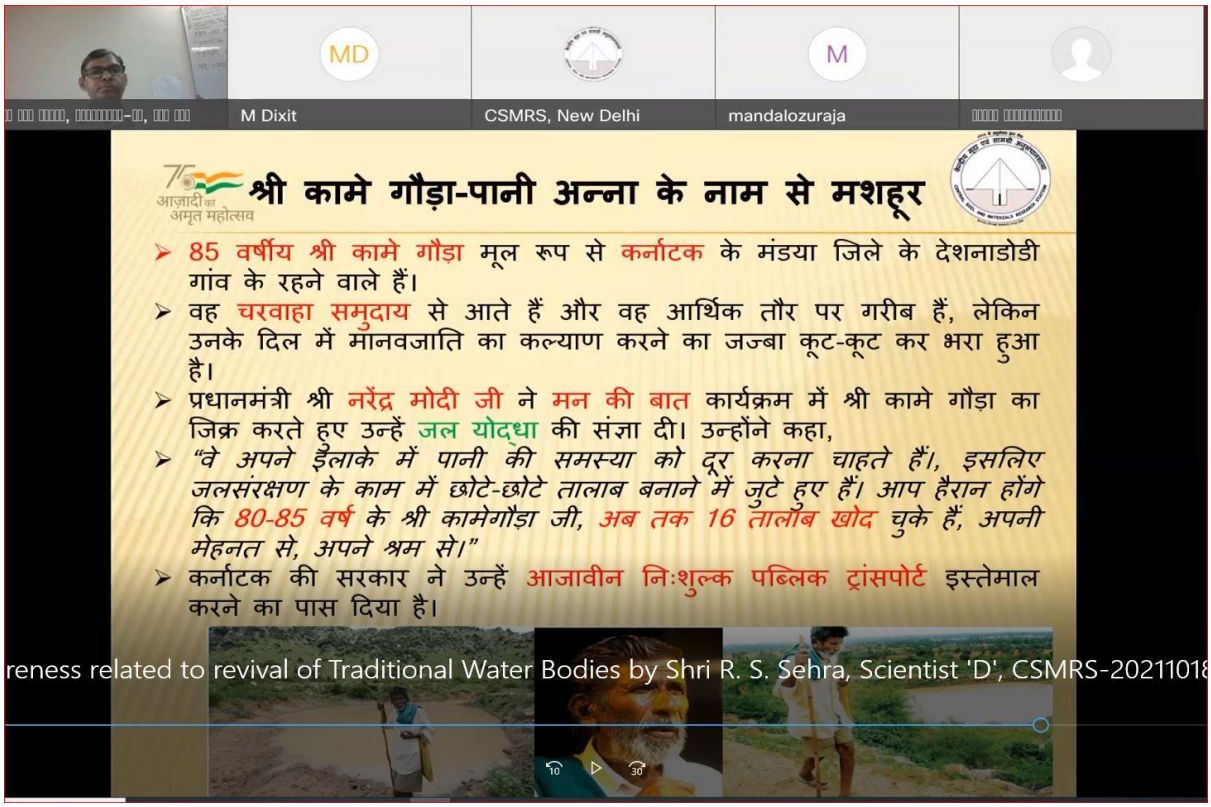

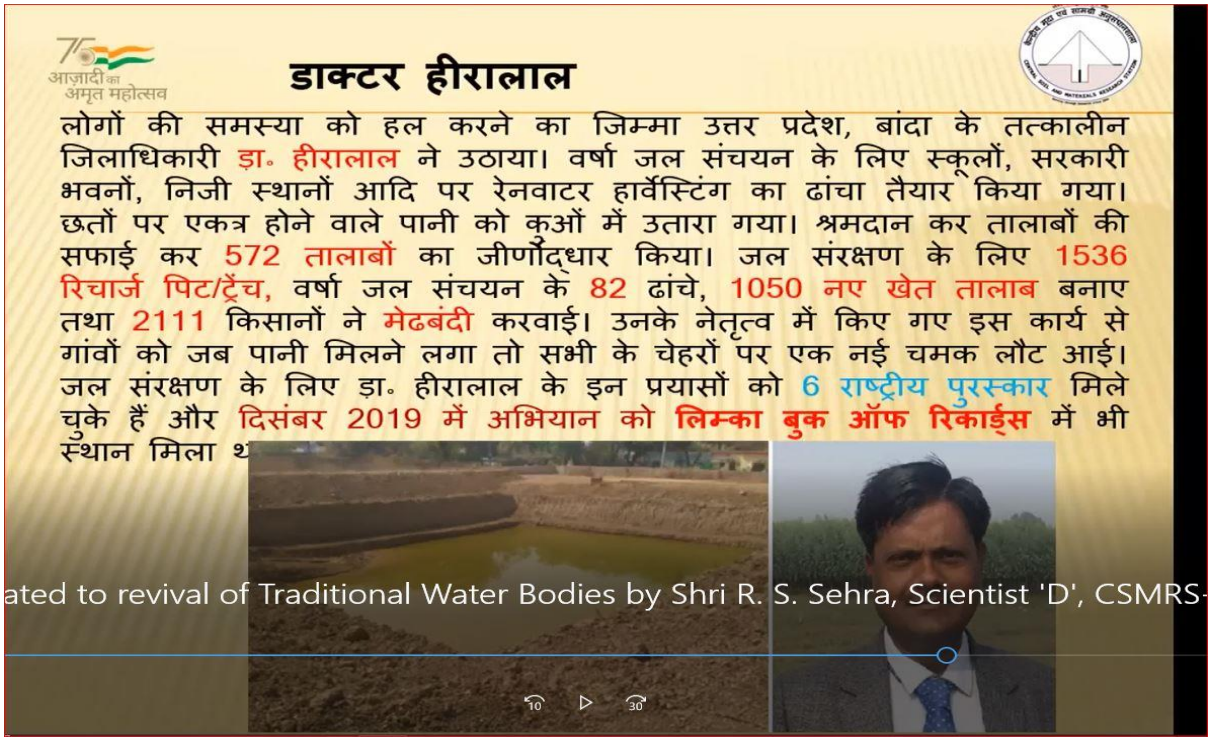

बांस ड्रिप सिंचाई प्रणाली

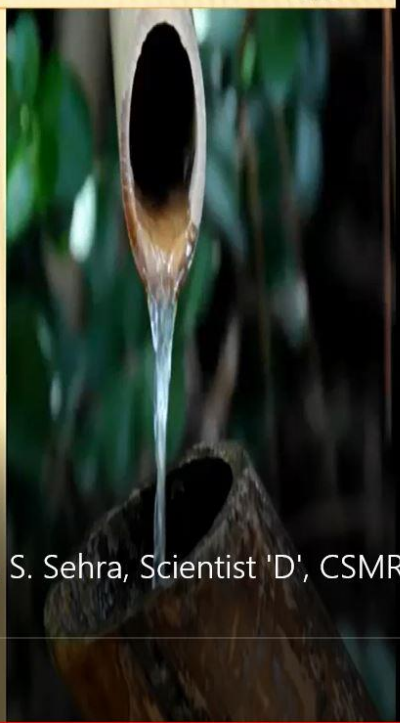

- यह जल संरक्षण की एक शानदार ड्रिप सिंचाई प्रणाली है। जिसमें धारा और झरने के पानी का उपयोग विभिन्न आकार के बांस के पाइपों द्वारा किया जाता है जिससे आउटपुट उत्पादन को 20-80 बूंद प्रति मिनट तक कम कर देती है, जो कि सुपारी और काली मिर्च की फसलों के लिए शानदार है।
- यह सिंचाई प्रणाली अलग-अलग क्रॉस सेक्शन के बांस के पाइपों के उपयोगों से बनी है जो पहाड़ी की चोटी पर बारहमासी झरनों से पानी लेते हैं और पानी के प्रवाह को पाइप की बदलती स्थिति (आकार) से नियंत्रित किया जाता है। यह विधि इतनी कुशल है कि पानी को पौधों की जडों पर गिराने में सक्षम होती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई अपवाह और अपव्यय नहीं हो।
- मेघालय में प्रचलित, इस प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य वृक्षारोपण की सिंचाई करना है।
- 200 साल पुरानी इस प्रणाली में हर मिनट 18-20 लीटर पानी बांस की पाइप प्रणाली में प्रवेश करके नीचे के खेतों की सिंचाई करता है।

ated to revival of Traditional Water Bodies by Shri R. S. Sehra, Scientist 'D', CSMRS-20

450 साल से सहेजा जा रहा बूंद-बूंद पानी

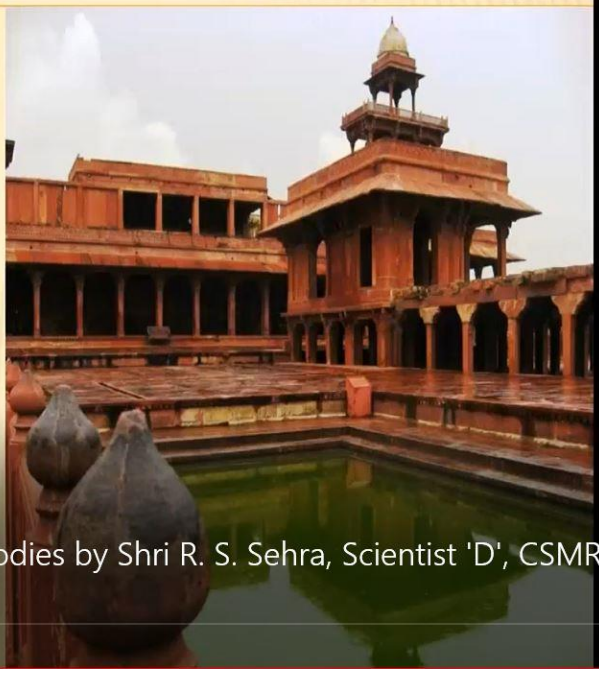

- मुगलकालीन वर्षा जल संचयन प्रणाली के जाग्रत उदाहरण फतेहपुर सीकरी में स्थित शेख सलीम चिश्ती की दरगाह व अकबर के किले में आज भी मौजूद हैं और बाकायदा काम कर रहे हैं। दरगाह परिसर में स्थित संगमरमरी मजार की छत से बारिश का पानी मजार के पोले खंभों से होते हुए परिसर मे बनी ढकी हुई नालियों से होकर एक भूमिगत कुएं में जाता है।
- पेयजल किल्लत होने पर लोग संग्रहीत वर्षा जल का पीने के लिए उपयोग करते थे, कुछ लोग आज भी इसे पवित्र जल मान जरूरत पड़ने पर पीने के काम में लाते हैं।
- वर्षा जल संचयन की यह प्रणाली वर्ष 1571 में इस निर्माण के समय ही बनी थी और आज भी सुचारु है।

lated to revival of Traditional Water Bodies by Shri R. S. Sehra, Scientist 'D', CSMRS-202